सुरः रह़मान की बुलन्दी

हज़रत इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम इरशाद फ़रमाते हैं कि जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सुरः मुबारका रहमान को क़ुरान की दुनिया का दुलहा जानो। नीज़ हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ०स०) से रवायत है कि सूरः रहमान का पढ़ना तर्क न करो यह सूरः मुनाफ़िकों के दिलों में नहीं ठेहरता और दूसरी रिवायत में है कि हज़रत इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जो कोई सूरः रहमान पढ़े और फ़–बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान के बाद ला–बि–शैइन मिन आलाइ–क रब्बी उकज़्ज़िबु कहे तो मरने पर शहीद का दर्जा पायेगा और जुमा के दिन सूरः रहमान पढ़ने और फ़–बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान के बाद ला बि शैइन मिन आलाइ–क रब्बी उकज़्ज़िबु कहने की बहुत ताकीद है और बेहद सवाब है।

सूरः रह़मान

सूरः रह़मान

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

इबतिदा अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है।

अर्रह़मानु अल्लमल कुरआन०

बड़ा मेहरबान (ख़ुदा) उसी ने कुरान की तालीम

ख़ल़-ल-क़ल इंसान०

फ़रमाई, उसी ने इंसान को पैदा किया, उसी ने

अ़ल-ल-महुल बयान०

उसको (अपना मतलब) ब्यान करना सिखाया,

अश्शम्सु वल क़-म-रु बि

सूरज और चांद एक मुक़र्रर हिसाब से (चल रहे)

हुस्बान० वन्नज्मु वश्श-ज-रु

है, और बूटियां बेलें और दरख़्त (उसी को)

यस्जुदान० वस्समा-अ

सज्दा करते हैं, और उसी ने आसमान बुलन्द

र-फ़-अ़हा व व-ज़-अ़ल

किया और तराज़ू (इंसाफ़) को क़ायम किया,

मीज़ान० अल्ला तत़्ग़ौ फ़िल

ताकि तुम लोग तराज़ू (से तौलने) में हद से

फख़्ख़ार० व ख़ा-ल-क़ल
आग के शोले से पैदा किया, तो (ए गिरोहे
जान-न मिम मारिजिम
जिन्न व इंस) तुम अपने परवरदिगार की कौन
मिन्नार० फबिअय्यि आलाइ
कौन सी निमत से मुकरोगे, वही (जाड़े गर्मी के)
रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान० रब्बुल
दोनों मश्रिक़ों का मालिक है और दोनों मग़्रिबों
मश्रिकैनि व रब्बुल
का (भी) मालिक है, तो (ए गिरोहे जिन्न व इंस)
मग़्रिबैन० फबिअय्यि आलाइ
तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निमत
रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान०
से इंकार करोगे, उसी ने दो दरिया बहाये जो
म-र-जल बह्रैनि यल्तक़ियान०
बाहम मिल जाते हैं, दोनों के दरमियान एक
बैनहुमा बरज़ख़ुल ला
हद्दे फ़ासिल (आड़) है जिससे तजावुज़ नहीं
यब्ग़ियान० फबिअय्यि
कर सकते, तो (ए गिरोहे जिन्न व इंस) तुम

सूरः रहमान

मीज़ान० व अक़ीमुल वज़्-न
तजावुज़ न करो और इंसाफ़ के साथ ठीक
बिल क़िस्त़ि वला तुख़्सिरुल
तोलो और तौल कम न करो और उसी ने लोगों
मीज़ान० वल अर-ज़
के नफ़ा के लिए ज़मीन बनाई, कि उसमें मेवे
व-ज़-अ़हा लिल अनाम०
और खुजूर के दरख़्त हैं जिसके ख़ोशों में
फ़ीहा फ़ाकिहतुंव वन नख़्लु
ग़िलाफ़ होते हैं और अनाज, जिसके साथ भुस
ज़ातुल अक्माम० वल ह़ब्बु
होता है और ख़ूशबूदार फूल, तो (ऐ गिरोहे
जुल अ़स्फ़ वर रैहान०
जिन्न व इंस) तुम दोनों अपने परवरदिगार की
फबिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा
कौन कौन सी निमत को न मानोगे, उसी ने
तुकज़्ज़िबान० ख़ा-ल-क़ल
इंसान को ठेकरी की तरह खनखनाती हुई
इंसा-न मिन स़ल्सालिन कल
मिट्टी से पैदा किया, और उसी ने जिन्नात को

आलाइ रब्बिकुमा
अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निमत को
तुकज़्ज़िबान० यख़रुजु
झुठलाओगे, इन दोनो दरियाओं से मोती और
मिन्हुमल लुअलुऊ वल
मोंगे निकलते हैं, तो (ए गिरोहे जिन्न व इंस)
मरजान० फ़बिअय्यि आलाइ
तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निमत
रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान० व
को न मानोगे, और जहाज़ जो दरिया में पहाड़ों
लहुल जवारिल मुंशआतु
की तरह ऊँचे खड़े रहते हैं उसी के हैं तो (ए
फ़िल बहिर कल अअ़लाम०
गिरोहे जिन्न व इंस) तुम अपने परवरदिगार की
फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा
कौन कौन सी निमत को झुठलाओगे, जो
तुकज़्ज़िबान० कुल्लु मन
मख़्लूक ज़मीन पर है सब फ़ना होने वाली है
अ़लैहा फ़ान० व यब्क़ा वज्हु
और सिर्फ़ तुम्हारे परवरदिगार की जात जो

सूरः रहमान

रब्बि-क़ जुल जलालि वल
अज़मत और करामत वाली है बाकी रहेगी, तो
इक्राम० फ़बिअय्यि आलाइ
(ए गिरोहे जिन्न व इंस) तुम अपने परवरदिगार
रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान०
की कौन कौन सी निमतों से इंकार करोगे, और
यस्अलुहु मन फ़िस्सवामाति
जितने लोग जो सारे आसमान व ज़मीन में हैं
वल अर्ज़ि कुल्लु यौमिन हु-व
(सब) उसी से मांगते हैं वह हर रोज़ (हर वक़्त)
फ़ी शान० फ़बिअय्यि आलाइ
मख़लूक़ के (एक न एक) काम में है तो तुम
रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान०
दोनों अपने सरपरस्त की कौन कौन की निमत
स-नफ़रुग़ु ल-कुम अय्युहस
से मुकरोगे, ऐ दोनों गिरोहो हम अंकरीब ही
स-क़-लान० फ़बिअय्यि
तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह होंगे, तो तुम दोनों
आलाइ रब्बिकुमा
अपने पालने वाले की किस किस निमत को न

तुकज़्ज़िबान० या माश-रल
मानोगे, ऐ गिरोहे जिन्न व इंस अगर तुम में
जिन-नि वल इंसि
कुदरत है कि आसमान और ज़मीन के किनारों
इनिस्त-तअ़तुम अन तंफ़ुजू
(होकर कहीं) निकल (कर मौत या अज़ाब से
मिन अक़्तारिस्समावाति वल
भाग) सको तो निकल जाओ (मगर) तुम तो
अर्ज़ि फंफ़ुजू ला तंफ़िजू-न
बग़ैर क़ुव्वत और ग़लबा के निकल ही नहीं
इल्ला बि सुल्तान०
सकते (हालांकि) तुम में तो क़ुव्वत है न ग़लबा,
फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा
तो तुम अपने परवरदिगार की किस किस निमत
तुकज़्ज़िबान० युरसलु
को झुठलाओगे, (गुनिहगार जिनो और आदमियो!
अ़लैकुमा शुवाजुम मिन
जहन्नम में) तुम दोनों पर आग का सब्ज़ शोला
नार० व नुहासुन फ़ला
और स्याह धुवां छोड़ दिया जायेगा तो तुम दोनों

सूरः रहमान

तंतसिरान० फ़बिअय्यि
(किसी तरह) रोक नहीं सकोगे, फिर तुम दोनों
आलाइ रब्बिकुमा
अपने परवरदिगार की किस किस निमत से
तुकज़्ज़िबान० फ़-इज़ा
इंकार करोगे, फिर जब आसमान फट कर
शक़्क़तस्समाउ फ़-कानत
(क़यामत में) तेल की तरह लाल हो जायेगा तो
वर-द-तन कद्दिहान०
फिर तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस
फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा
निमत से इंकार करोगे, तो उस दिन न तो
तुकज़्ज़िबान० फ़ यौमइज़िल
किसी इंसान से गुनाह के बारे में पूछा जायेगा न
ला युस्अलु अन ज़ंबिहि
किसी जिन से, फिर तुम दोनों अपने परवरदिगार
इंसुव वला जान० फ़बिअय्यि
की किस किस निमत से इंकार करोगे, गुनहगार
आलाइ रब्बिकुमा
लोग तो अपने चेहरों ही से पहचान लिये जायेंगे,

तुकज़्ज़िबान० व लिमन
खड़े होने से डरता रहा उसके लिए दो दो बाग़
ख़ा-फ़ मक़ा-म रब्बिहि
हैं, तो तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस
जन्नतान० फ़बिअय्यि आलाइ
किस निमत से इंकार करोगे, दोनों बाग़ (दरख़्तों
रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान०
की) टहनियों से हरे भरे (मेवों से लदे) हुए, फिर
फ़ीहिमा अ़ैनानि तज्रियान०
तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस
फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा
निमत से इंकार करोगे, इन दोनों में दो चश्में भी
तुकज़्ज़िबान० फ़ीहिमा
जारी होंगे, तो तुम दोनों अपने परवरदिगार की
फ़ाकिहतिन ज़ौजान०
किस किस निमत से इंकार करोगे, इन दोनों
फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा
बागों में सब मेवे दो किस्म के होंगे, तो तुम दोनों
तुकज़्ज़िबान० मुत-त-किई-न
अपने परवरदिगार की किस किस निमत से

सूरः रहमान

तुकज़्ज़िबान० युअ़र-फ़ुल
तो पेशानी के पट्टे और पाओं पकड़े (जहन्नम
मुज्रिमू-न बिसीमाहुम
में डाल दिये) जायेंगे, आख़िर तुम दोनों अपने
फ़युअ़ख़ज़ु बिन्नवासी वल
परवरदिगार की किस किस निमत से इंकार
अक़्दाम० फ़बिअय्यि आलाइ
करोगे, (फिर उनसे कहा जायेगा) यही वह
रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान०
जहन्नम है जिसे गुनहगार लोग झुठलाया करते
हाज़िहि ज-हन्न-मुल्लती
थे, यह लोग दोजख और हद दर्जा खौलते हुए
युकज़्ज़िबु बिहल मुजरिमून०
पानी के दरमियान (बे करार दोड़ते) चक्कर
यतूफ़ू-न बैनहा व बैन
लगाते फिरेंगे, तो फिर तुम दोनों अपने
हमीमिन आन० फ़बिअय्यि
परवरदिगार की किस किस निमत से इंकार
आलाइ रब्बिकुमा
करोगे, जो शख़्स अपने परवरदिगार के सामने

अ़ला फ़ुरुशिम बत़ाइनुहा
इंकार करोगे, यह लोग उन फ़रिश्तों पर जिनके
मिन इस्तब्रक़िन व जनल
स्तर इतलस के होंगे तकिये लगाये बैठे होंगे
जन्नतैनि दान० फ़बिअय्यि
दोनों बाग़ों के मेवे (इस क़दर) क़रीब होंगे (कि
आलाइ रब्बिकुमा
चाहें तो लगे हुए खायें), तो तुम दोनों अपने
तुकज़्ज़िबान० फ़ीहिन-न
परवरदिगार की किस किस निमत से इंकार
क़ासिरातुत्तर्फ़ि लम्
करोगे, इस में (पाकदामन) ग़ैर की तरफ़ आँख
यत्मिस्हुन-न इंसुन
उठा कर न देखने वाली औरतें होंगी, जिन को
क़ब्ल-हुम वला जान०
इन से पहले न किसी इंसान ने हाथ लगाया
फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा
होगा और न किसी जिन ने, तो तुम दोनों अपने
तुकज़्ज़िबान० क-अन-न
परवरदिगार की किस किस निमत से इंकार

सूरः रहमान

हुन्नल याक़ूतु वल मरजान०
करोगे, (ऐसी हसीन) गोया वह (मुजस्सम) याक़ूत
फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा
व मोंगे हैं, तो तुम दोनों अपने परवरदिगार की
तुकज़्ज़िबान० हल जज़ाउल
किस किस निमत से इंकार करोगे, भला नेकी
इह्सानि इल्ल इह्सान०
का बदला नेकी के सिवा कुछ और भी है, फिर
फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा
तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस
तुकज़्ज़िबान० व मिन
निमत को झुठलाओगे, इन दोनों बागों के
दूनिहिमा जन्नतान०
अलावा दो बाग और हैं, तो तुम दोनों अपने
फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा
परवरदिगार की किस किस निमत को
तुकज़्ज़िबान० फ़ीहिमा
झुठलाओगे, दोनों निहायत गहरे सब्ज़ व शादाब,
अ़ैनानि नज्ज़ाख़ातान०
तो तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस

तुकज़्ज़िबान० लम् यत्मिस
निमत को झुठलाओगे, इनसे पहले उनको किसी
हुन्न् इंसुन क़ब्ल-हुम वला
इंसान ने छुवा तक नहीं और न जिन ने, फिर
जान० फ़बिअय्यि आलाइ
तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस
रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान०
निमत को झुठलाओगे, यह लोग सब्ज़ क़ालीनों
मुत्तकिई-न अला रफ़रफ़िन
और नफ़ीस व हसीन मसनदों पर तकिये लगाये
ख़ुज़्ज़िरव व अब्क़रिय्यिन
(बैठे) होंगे, फिर तुम दोनों अपने परवरदिगार की
हिसान० फ़बिअय्यि आलाइ
किस किस निमत को झुठलाओगे, (ऐ रसूल)
रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान०
तुम्हारा परवरदिगार जो साहिबे जलाल व
तबा-र-कस्मु रब्बि-क
करामत है, उसका नाम बड़ा बा बरकत है।
ज़िल्जलालि वल इक्राम०
☆☆☆☆☆

सूरः रहमान

फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा
निमत को झुठलाओगे, इन दोनों बाग़ों में दो
तुकज़्ज़िबान० फ़ीहिमा
चश्मे जोश मारते होंगे, तो तुम दोनों अपने
फ़ाकि-हतुंव व नख़्लुंव व
परवरदिगार की किस किस निमत को
रुम्मान० फ़बिअय्यि आलाइ
झुठलाओगे, इन दोनों में मेवे हैं और खुर्मे और
रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान०
अनार, तो तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस
फ़ीहिन-न ख़ैरातुन हिसान०
किस निमत को झुठलाओगे, इन बाग़ों में खुश
फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा
ख़ल्क और खूब सूरत औरतें होंगी, तो तुम दोनों
तुकज़्ज़िबान० हूरुम
अपने परवरदिगार की किस किस निमत को
मक़्सूरातुन फ़िल ख़ियाम०
झुठलाओगे, वह हूरें हैं जो ख़ेमों में छिपी बैठी हैं,
फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा
फिर तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस